भारतीय ज्ञान परंपरा में संचार की अवधारणा पर हुआ व्याख्यान

भारतीय ज्ञान परंपरा श्रुति और स्मृति की परंपरा है : प्रो. कृष्ण कुमार सिंह

वर्धा, 20 सितंबर 2024 : महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में "भारतीय ज्ञान परंपरा में संचार की अवधारणा" विषय पर विशिष्ट व्याख्यान का आयोजन गुरुवार 19 सितंबर को महादेवी वर्मा सभागार में किया गया। जिसकी अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. कृष्ण कुमार सिंह ने कहा कि "भारतीय ज्ञान परंपरा श्रुति और स्मृति की परंपरा है तथा लोक (व्यवहार) और शास्त्र (वेद) में कोई द्वंद्व नहीं है। अपितु, वे साथ-साथ चलते हैं।" उन्होंने श्रुति (श्रुतिधर) और स्मृति की परंपरा को बड़े रोचक तरीके से बताते हुए भारतीय ज्ञान परंपरा को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि अध्यापक, वकील और पत्रकार इन तीनों की ताकत 'भाषा' है।

मुख्य वक्ता भारतीय जनसंचार संस्थान, नई दिल्ली के पूर्व महानिदेशक प्रो. संजय द्विवेदी थे। उन्होंने कहा कि दुनिया में कोई भी काम संचार के बिना सम्भव नहीं है। सभी समस्याओं का समाधान संवाद के द्वारा किया जा सकता है। भारत एक समावेशी विचार है

तथा भारत को समझने के लिए उसकी भाषा को समझना होगा। उन्होंने 'भारत-बोध' के लिए हिंदी भाषा की महत्ता का युक्तिसंगत तरीके से विवेचन किया तथा बताया कि जो 'श्रेष्ठ होगा वही टिकेगा'।

संगोष्ठी में स्वागत और बीज वक्तव्य दर्शन एवं संस्कृति विभाग के अध्यक्ष डॉ. विपिन कुमार पाण्डेय ने दिया। उन्होंने शास्त्र परंपरा को भारतीय ज्ञान परम्परा के रूप लेने का पक्ष स्पष्ट किया। अपने व्यक्तव्य में उन्होंने संचार की भारतीय अवधारणा स्पष्ट करते हुए

तीन प्रकार के संचारकों निसृष्टार्थक, मितार्थ, तथा सन्देशहारक के विचार का प्रस्ताव किया तथा उसके कई पहलुओं से श्रोताओं को अवगत कराया।

कार्यक्रम का प्रारंभ दीप-दीपन से किया गया। डॉ. जगदीश नारायण तिवारी ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। संचालन डॉ. सूर्य प्रकाश पाण्डेय ने किया तथा डॉ. जयंत उपाध्याय ने आभार माना।

इस अवसर पर प्रो. अवधेश कुमार, प्रो. जनार्दन कुमार तिवारी, प्रो. अनिल कुमार पाण्डेय, डॉ. रामानुज अस्थाना, डॉ. उमेश कुमार सिंह, डॉ.एच.ए. हुनगुन्द, डॉ. परिमल प्रियदर्शी, डॉ. बालाजी चिरडे, डॉ. मुन्नालाल गुप्ता, डॉ. रूपेश कुमार सिंह, डॉ. श्रीनिकेत

मिश्र, डॉ. रणंजय कुमार सिंह, डॉ. दिग्विजय मिश्र, डॉ. वागीश राज शुक्ल, डॉ. कोमल कुमार परदेशी सहित बड़ी संख्या में शोधार्थी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

क्षेत्रीय केन्द्र प्रयागराज, क्षेत्रीय केन्द्र कोलकाता तथा सर्वज्ञ श्री चक्रधर स्वामी मराठी भाषा तथा तत्त्वज्ञान अध्ययन केंद्र, रिध्दपुर (अमरावती) के शिक्षक एवं विद्यार्थी ऑनलाइन माध्यम से जुड़े थे।